अध्याय 1

प्रस्तावना

अध्याय– 1 : प्रस्तावना

आपदा का अर्थ किसी क्षेत्र में प्राकृतिक अथवा मानव निर्मित कारणों, या दुर्घटना या अनदेखी से होने वाली प्रलय, दुर्घटना, आपदा या अन्य कोई गम्भीर घटना से है, जिसके परिणामस्वरूप जीवन की पर्याप्त हानि या मानव पीड़ा या सम्पत्ति की क्षति एवं विनाश, या पर्यावरण की क्षति एवं पतन होता है और जो कि प्रभावित क्षेत्र के समुदायों की सहनशक्ति से परे होता है। जून 2013 में उत्तराखण्ड राज्य में हिमालय पर्वत की उच्च श्रृंखलाओं में आई आपदा एक तीव्र जलवायु संबंधित घटना थी जिसके परिणामस्वरूप अभूतपूर्व स्तर पर जन-जीवन एवं सम्पत्ति की क्षति हुई।

16 - 17 जून 2013 को उत्तराखण्ड राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में हुई अत्यधिक वर्षा (>400 मिमी) के कारण आई विनाशकारी बाढ़ की वजह से जगह-जगह भू-स्खलन हुआ। इन आकस्मिक बाढ़ों एवं भू-स्खलनों के कारण चौतरफा विनाश हुआ तथा भौतिक आधारभूत सरंचना, कृषि क्षेत्रों, मानव एवं पशु जीवन तथा सड़कों को भी भारी नुकसान पहुँचा। प्रभावित लोगों की निकासी का कार्य 18 जून 2013 को प्रारम्भ हुआ एवं सितम्बर 2013 के अन्तिम सप्ताह में पूर्ण हुआ। फंसे हुए कुल 1.14 लाख तीर्थ यात्रियों/ स्थानीय लोगों को वायुमार्ग द्वारा निकाला गया। अन्य 0.36 लाख लोगों को खच्चरों द्वारा अथवा पैदल मार्ग से बाहर निकाला गया।

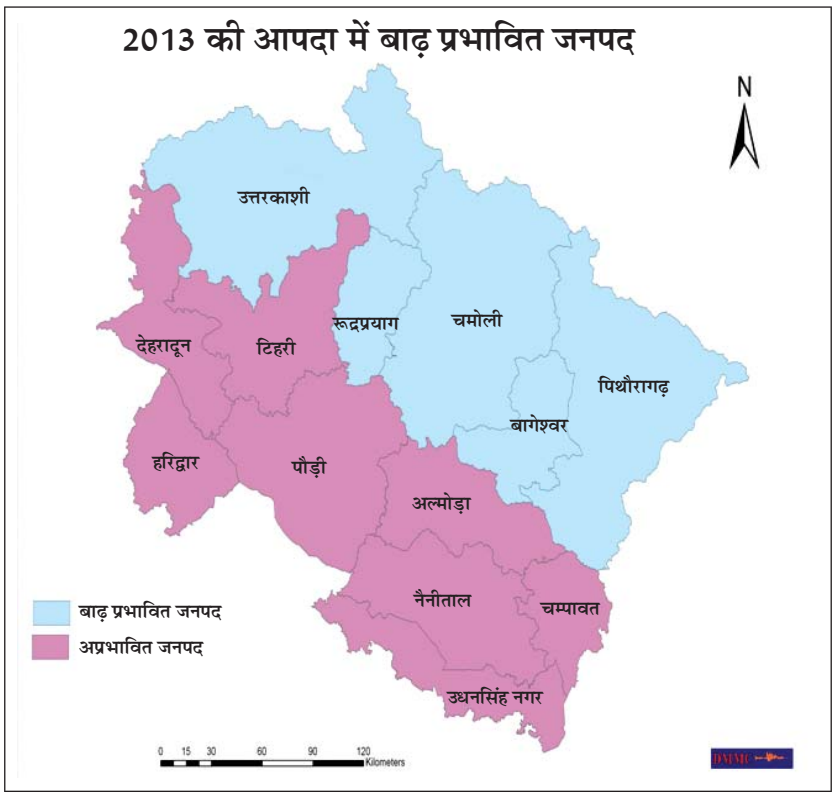

स्रोतः आ न्यू एवं प्र के, देहरादून

यद्यपि, जून 2013 की आपदा द्वारा पाँच जनपद बुरी तरह प्रभावित थे तथापि राज्य सरकार ने राज्य के समस्त 13 जनपदों को आपदा प्रभावित घोषित कर दिया। पाँच सार्वाधिक प्रभावित जनपद बागेश्वर, चमोली, पिथौरागढ़, रूद्रप्रयाग और उत्तरकाशी थे। जून 2013 की आपदा के कारण राज्य में हुई कुल क्षति की स्थिति निम्नलिखित तालिका में दी गई है:-

तालिका: 1.1

मानव जीवन	4,209
भवन	19,309
पशुधन	17,838
भूमि (है0)	13,637
फसल (है0)	10,899

त्रासदी की व्यापकता एवं तीव्रता का गुणात्मक प्रभाव था। उत्तराखण्ड राज्य के सभी विख्यात तीर्थस्थल जैसे बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री एवं हेमकुण्ड साहिब, जो कि उत्तरी उच्च पर्वतों, हिमाच्छादित क्षेत्रों में स्थित हैं, बुरी तरह से प्रभावित हुए। सूचना के अनुसार जनपद रूद्रप्रयाग में ऊपरी मन्दाकिनी नदी-घाटी में स्थित पवित्र तीर्थस्थल, प्राचीन श्री केदारनाथ धाम अधिकतम क्षति तथा जनहानि के साथ राज्य के सर्वाधिक बुरे प्रभावित क्षेत्रों में से एक था। कुछ ही क्षणों में समग्र श्री केदारनाथ कस्बा हिमनद मलबों तथा पत्थरों के ढेर में परिवर्तित हो गया। आगे धारा की नीचे की ओर स्थित रामबाड़ा कस्बा पूरी तरह नष्ट हो गया जबकि गौरीकुण्ड और सोनप्रयाग कस्बे बुरी तरह प्रभावित हुए। इस प्रलयकारी घटना ने पूरी घाटी को भू-स्खलन, मलबा-प्रवाह तथा चट्टानों के गिरने से भौगोलिक रूप से अधिक कमजोर एवं असुरक्षित बना दिया। यह प्राकृतिक खतरा एक बड़ी आपदा में परिवर्तित हो गया क्योंकि कस्बा तीर्थयात्रियों एवं स्थानीय जनता की भीड़ भाड़ से भरा हुआ था।

रामबाड़ा आपदा से पूर्व एवं पश्चात

स्रोत: उत्तराखण्ड शासन

सरकार के पास चार-धाम[1] यात्रियों के कोई आँकड़े नहीं थे जिसका उपयोग कर चार-धाम जाने वाले यात्रियों की सही-सही संख्या सुनिश्चित की जा सके। अतएव, उपरोक्त के अभाव में सरकार उन तीर्थयात्रियों की निश्चित संख्या नहीं बता सकी जो कि आपदा के दौरान केदारनाथ में थे या 15 और 17 जून, 2013 के मध्य चार-धाम के यात्रा मार्ग में फंसे हुए थे।

केदारनाथ आपदा से पूर्व एवं पश्चात

स्रोतः उत्तराखण्ड शासन

[1] चार-धाम (यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ एवं बद्रीनाथ)।